पाठम - अध्याय

जगदीशचन्द्र एवं समझलीन उपन्यासकार एक युत्तात्मक दृष्टिकोण
तालीत्तरी उपन्यासों में वर्ण-संग्राम, सामाजिक विशेषतावर्ग, आयुष्मानता, ध्रुव, धर्म, उपवन, आत्मनिर्भरता, पारम्परिक गृह्यात्मक रूपों का रूपांतर आदि सब कुछ व्यक्त है। समकालीन उपन्यास शैली ने इन सभी तत्त्वों पर अपने-अपने रुपों में प्रकट करता है। जगदीश्चन्द्र के उपन्यासों "घाटी के पहाड़" "शापक त्यंग" "धरती धन न अपना", "कजी जन प्रति वेश", "मुद्रास्थ भर सङ्क्रंच", "धरती-भोजन" आदि में उनका ध्येय आत्मानिर्भरता, ध्वस्त होने का स्तर, ध्यवन-संग्राम, जातीय विशेष, शहरी-राष्ट्रीय आदि पूर्वाभाषाओं सातळतरी भुगत की देख है। इन सभी पूर्वाभाषाओं में जगदीश्चन्द्र ने समकालीन उपन्यासों तक भी बुझाया अपना तर्क तथ विकल्प है। कहीं वे "घाटी" के पहाड़ को लिखकर "अध्यय" एवं "पिरीर अर्धम" के तीनवर्ष भा जाते हैं तो कहीं "धरती धन न अपना" के नेरापथ में "फ्रेमस्ट्रू" तक के रविवार बिकाले देखें। कहीं वे "रामसदर धारा", "मतिमुखुर धारा", "श्रीराम धारा" तथा "कजी जन प्रति वेश" में इंट रहकर "रेडियो" तथा "फ्रेमस्ट्रू" के वैज्ञानिक से कदम ते कदम भ्रमित चलने का प्रयास करते है। तो कहीं बढ़ते घटना परिवर्तने के निर्देशन में शहरी वातावरण में गुंस लेने को मजबूर गृहीम भालोत्तरियों को वे "यापाल" के लाख महत्त्व देते हैं।

इन तरह इस अव्यय में उपार्जित समकालीन उपन्यासों के साथ जगदीश्चन्द्र को रचना एवं भव-वस्तु के धरती पर देखने का प्रयास किया गया है। जगदीश्चन्द्र अध्यय तथा पिरीर अर्धम।

तवल्योत्सार उपन्यासों की दृष्टिकोण: युद्धपरासत उपन्यास यात्रिकता, जीवन में अनाज मौलिक और उपवनतत्त्व की ओर रही है। अध्यय में "गृह के पहाड़" "भीरुक एक जीविती" "पिरीर अर्धम" ने "वे दिन" और जगदीश्चन्द्र ने "घाटी के पहाड़" में युद्धपरासत श्रीराम के बालों तथ्यों को विशेषत देखने का प्रयास किया है।

यात्रिकता में आदर्श मनुष्य पूर्वाभाषा की दृष्टि में यह सरस्तर श्रीराम के प्रश्नरूप रूप को प्रस्तुत करने में प्रमाणरूप रहता है। अपने दृष्टि की पूर्ति की अवस्था में वह धरतीती ही युद्ध है। वह इस जीवन की अग्नि है और यही व्यक्ति है:- "घाटी के पहाड़" की तर्कन के दो ग्रंथ का सुन दिखाई देने: जन्म के सिर में कुछ नितांत निकी और आद्रेक के केंद्र धरती उत्तरक होंगे किरण और पहाड़ के तर करचर धरती का जंतु युद्धवा "भीरुक हुज्ज यमाल्"।(1)
यादों में बना "दिलेखा" हो या अपने जीवन की गाथा प्रस्तुत करता "शेखर"। दोनों में क्रम: जगदीशचन्द्र और अंबेडकर दी व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं। "यादों के पड़ाह" के उपन्यासत्ता एवं "शेखर एक जीविनी" के कृतिकार के पान, अंबेडकर, आराध्यतावादी, सामाजिक यथित्तिय एवं मैतितकता से दूर आत्मसातिता और आत्मसृजिता है। इस संबंध में ही इन्द्रधनुष गद्दी का कथन दृढ़धय है कि "यह नारिसिक तथा निपटतिनवादी हैं। इसका आदर्श अंबेडकर सूर्य नारी पर अधिकार पाने में तीन है।"(3) अंबेडकर और जगदीशचन्द्र अपनी आलोचना कृतियों में अन्तर्दृष्ट क्षणियां में अन्तर्पहुंच क्षणिय के रूप में प्रस्तुत होते हैं। यहाँ "शेखर" और दिलेखा दैवितिक अवशेष हैं।

भारतीय संस्कृति के पूरा विपील करने वाले वे उपन्यासकार वस्तु से गहरे रूप में बुझकर भी कही-कही असंतूप है। इसके लिए तब कुछ क्षणिय हैं। इस समानता के वापस अंबेडकर और जगदीशचन्द्र अलग-अलग याद देने हुए दिखाई देते हैं। "यादों के पड़ाह" में जम, कुंचा व्यक्ति है पर विद्वेष नहीं है, अंबेडकर पर विकल्पण नहीं परन्तु "शेखर एक जीविनी" में दोनों तरह-साथ है।

इसके निकट डीो के दोनों गद्दी के संदिधि में ही सातती है। "जहाँ कम लुप्त है वही विद्वेष कभी है। औरंग अंबेडकर उज्ज्वल अंतर है। दोनों में पूर्णता कि जिज्ञासा है पर दिनेह जहाँ दूसरे की पूर्णता को अस्तीकार करता है यही शेखर दूसरे के साथ पूर्ण हो जाना आतय है।"(4) शेखर और दिलेखा में यही मूलभूत अंतर है। दोनों में पूर्णता की जिज्ञासा है पर दिनेह जहाँ दूसरे की पूर्णता को अस्तीकार करता है यही शेखर दूसरे के साथ पूर्ण हो जाना आतय है।

कामीकर के प्रकृतिक दृष्टियों को शब्दों से विनिमय करने वाले जगदीशचन्द्र की तुलना अंबेडकर के शेखर और संस्कृति के कामीकरी दृष्टियों तथा शाईद और शेखर की "व्यं-प्रकृति" से ही जो सातती है।

है यह अलग अलग है कि जगदीशचन्द्र ने जहाँ लुप्त विद्वेष में पूर्णता की जिज्ञासा को मन्त्र बनाया है वहाँ-वहाँ ने दोनों प्रणाम में उसे उतारने का अज्ञातपूर्व प्रयास किया है परन्तु दोनों उपन्यासकार के प्रकृति व्यवस्था में नाममात्र व्यं-प्रकृति विषय से तेजस्वी एवं नैमितिक बन गया है।
"नदी के शीर्ष" में कप्तानु का अभाव है और विवाद गूँज से आबद्ध पान प्राप्त: एक दूसरे के निकट जाते हैं तथा दूर भी जाते हैं। जगदीशचन्द्र, ने इसका प्रयोग "यादों के पहाड़" में किया है: आवश्यक हृदय में दिनेश और गणेश के निकट भी जाते हैं। और दूर भी जाते हैं।

माननी का यह कहना सटीक है: "मैं दूसरे सिलसिले से टकरा सकती हूँ किन्तु अपने केन्द्र बिन्दु से दूर नहीं रहती।"[5] इस वैज्ञानिक पुस्तक में रेता पुरीकर जो रचा है मनो उपन्यासकार अपने संघित आवेश को शर्म से जापा पहला रहा है। एक विवाद के शब्दों में इस पुस्तक प्रस्तुत है कि - "सम्पूर्ण में लेखक का ध्यान कथाकथित के निर्भर नहीं जा पाया और अपने मन के संघित आवेशों के उच्चारण द्वारा रिश्ता धोका दान जाता है और वहाँ उसे लगता है कि अब कहने के लिए उसके पाल, हुए नहीं है।"[6]

"यादों के पहाड़" में लेखक की भाव प्रवचनात देखते ही सकते हैं कि पुस्तक "नदी के शीर्ष" अपने-अपने अलग-अलग अंशों में अंग्रेज का कल्तिक विवाद है। अंग्रेज ने अपने सप्ताहित का विभिन्न शैलियों में रचा है। जैसे: डाररी शैली, ४ शैली, वर्णप्रमाण शैली, विवादार्थक शैली आदि।

"यादों के पहाड़" प्रारंभ देखते ही सम्मानित है जो उपन्यासकार का उपन्यास रचना में एक नया प्रयोग है। वर्णप्रमाण शैली में इनके विवाद कही-कही प्रकट हुए हैं। अंग्रेज के वर्ण-शैली से कुछ का प्रयोग ही जगदीशचन्द्र ने किया है। दोनों ने अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के शब्दों का सटीक प्रयोग करते हुए अपनी रचना प्रभावित का निर्वाह किया। अंग्रेज और जगदीशचन्द्र ने कल्तिकार में समानात्मक रचना प्रदत्त का अनुसरण ना किया है। समानात्मक व्यक्तित्व के लिए दोनों के जीवन में - "हैर कम सफर चाहाय।"[7] फिर भी इस सफर में स्वभावित तच्छाई ही सम्मिलित है। डाइवल तनाव पूँछ का यह कथन दृष्टिकोण है- "लेखक स्वभावित की तच्छाई का प्रमाण उत्पन्न करने में सफल रहा है। संबंध का तंगेश पहले गोप लवण होता हुए भी नागण्य नहीं यह सबके प्रभावित जीवन के भीतर ने जीवन का समाप्ति प्राप्त की है।"[8]

निम्नलिखित वर्ण के "ये दिन" (1964) में बहुभाषीता के अन्यकथामाला को प्रस्तुत किया है।

"सूर्यन" (यादों के पहाड़) की भी है। निम्नलिखित वर्ण की आधुनिकता की स्वीकृति जगदीशचन्द्र में भी है। दिनेश और नारायण की सरलता भी है। दोनों उपन्यासकार इस दिन में संकेत देते हैं।

"ये दिन" वर्ण के जगती परम ने अपने उपन्यास कहा: "ये दिन और "यादों के पहाड़" ये दिन के बीज में मनोविश्व संबंधों को देखने का प्रयास किया है। यही ध्वस के


उपन्यासकार जगदीशचन्द्र ने अपने जीवनमूलक को लिखना अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। "धरती पन न अपना" उसी अनुभव का प्रतिलक है। यह कृति लेखक के जीवनमूलक के साथ अर्थिक, मार्गवाद और धार्मिक व्याख्याता की समस्याको और लेखक है।। शामिल वर्ष पर लिखा गया-जगदीशचन्द्र का हिन्दी को दिया गया- पहला उपन्यास है। वामप्रमाण के सीता की जगदीशचन्द्र ने विकास ने देखा और पहला उपन्यास है। विकास का तारीख और अभिलेख तारीख अब है। उनमें अपने "धरती" में कही मज़हब़ों के परस्पर दृष्टि, कही निमन तारीखों से तो कही, अत्य विभिन्न का िह न होने पर व्यक्त हुई। उक्त उपन्यास का कली-लेखक के कियोर में गढ़े लमान्त उपन्यासों को भंवत करने की गिरकार है।

प्रेमचन्द की लेखकीय अनुभूति भी इसी प्रकार "मोहन" में अभिव्यक्त है। इनी बान्त में निम्न बार्म के पछि होने वाले शोषण, अन्याय, अव्याचार को दूर कर उसे उसे भेद जीवन दे मानना की पृथक्कृति में लकड़ियों वर्तना छोड़ देते है। उनके मन की यह टीस "मोहन" में वापसी ले उतरी है। जगदीशचन्द्र का विभेद, "कली" प्रेमचन्द का नवीनित वर्णित "मोहर" है। दोनों के मन में उनके पृष्ठ होने वाले शोषण के पृष्ठ अपेक्षा है स्टॉक कि यह आंदोलन में प्रेमचन्द ने जगदीशचन्द्र की अभिलेख अड़क सफलता प्रदान की है। कली का गांव के पलायन दूरी करण से आपूर्तिकर कर देता है। यही साठों उत्साह होती है- तंदूरी वट्टे देखती है। दौरी का गांव। कली के घर बनाने की अद्यय रुप (लिखी तत्वों कभी अबी नयी हो सकती) अभिलेख ही रह गयी है। उसके " प्राचीन उसका सुन जाय अथवा उपन्यास में उन्होंने त्यस्त हो गया गया तरह है जिस तरह गोदा में दौरी का गांव वालें- ये
स्वातंत्र्यवाल भारत में जनादिवसवर्त वा गांव मूली प्रेमचंद के भारतीय गांव का ही प्रतीत है जहां सामाजिक शोध अभी बरकरार है। समाजवाद यह शोधन ही भूमिका की संधर्म गाथा को जना देगा है। प्रेमचंद के मन में यह विचारविवरण था कि मनलता की लघुपत्रा के लिए प्रति की बिज्ञारी गांव की ओर से ही हरी चीज़ चाहिए। कहना न होगा कि प्रति और जगुर्जी का प्रारंभ होना भी। एक महत्वपूर्ण कदम है। यह बात अलग है कि इसमें सफलता ही मिलती है। प्रेमचंद के मन में प्रारंभ हो तो ही मूली की मानसिकता के प्रति स्वतंत्र भाव नहीं रहा है। वनार्ती द्वारा चुनौती को फत के माध्यम से अपने वे विचार व्यक्त करते हुए वे निष्ठू ते- "जो व्यक्ति धन सम्पत्ति में विभेद और मन में हो, उसके मदद गुरु तो ही की में कल्पना भी नहीं कर सकता हूँ। वैसे ही किसी आदमी को धीरी झलक दी ही मात्र पर उसकी कला और बुद्धिमत्ता की बातों का भ्रम माफ़ कर देता हूँ।"[11] जगदीशचन्द्र के मन में भी इसी तरह प्रति उपस्थित होते रहे हैं। तरी-तिरी अध्ययन वर्तन बसता रहता है।- विकास मन की इस व्यवस्था में "धरती धन न अपना" के उपन्यासकार ने माना है कि "अर्थिक अपार्थित्र का चक्कर में पिट रहे दशरथ अब भी महाकालीन माता के शिकार है। रोही, कथा, मान में अपना कुछ भी नहीं है। विकास मन की वेदना और परिपक्व मनस्सा की तपस्वि के संगीत तो ही इस उपन्यास काव्य बन चुका है।"[12]

प्रेमचंद के उपन्यासों की भौति दीन-दलितों के प्रति संबंधन-ध्यान-प्रेमक करने वाले जगदीशचन्द्र भी "धरती की ही उपवा है। प्रेमचंद की मानसिकता से हुआ स्वतंत्रता ने शोधन की सुवर्णी, दीनार्थों की भूमि है। "जोदान" और "कोतर" "धरती" में "काली" के रूप में पहुँच है हर न होगा कि "ज्ञानोदय धरती में धन-तीव्रत वजर उसी आत्मिकता एवं संबंधकशीलता के लिए हुआ है, जिस अर्थमशील और संबंधकशीलता के लिए प्रेमचंद जुड़े हुए थे।"[13]

निष्कर्ष: प्रेमचंद और जगदीशचन्द्र ने भारतीय गांव की मिट्टी की लोही-सुगंध जो नागरिक शोधन, अनुभव, अवधारण के दृष्टि स्वाक्षरण ते बालक एवं पहल की है- यह प्रत्यय ही नहीं इसके संबंध में अपने वाला कर ही बतायेगा। फिर भी सभी दिशा की और संवेदन कम स्तम्भनी ले जाएगा।

- प्रेमचंद और जगदीशचन्द्र ने सुवर्ण अभिक, गणांगुरा, एवं संधार चित्र-
जगदीशचन्द्र के उप-वर्गों में व्याकरण पर उपनी व्याकरणार्थी शास्त्र की भावनात्मक
को तिनमात्र देती है। वर्तमान अवस्थात: अपनी दी जमीन की व्याकरण चर्चा की
श्रीलाल शुकल ने भी "भाग-दर्शारिया" में व्याकरण-दीर्घार अपनी अनुभवात: की अभिव्यक्ति का माध्यम
de नाम माना है। रामचरित मन्दिर में व्याकरण बुद्धाधार शीघ्र हो जा दोनों को समाज के समस्त व्याकरण द्वारा
समझता है, यद्यपि व्याकरण के कई विशिष्ट में कहीं इतिहास, कहीं सत्ता पर बांधकर कहीं
भौगोलिक प्रागी होता है। तत्वावधायक पैडार उपन्यास कर आगा है, इस उपन्यास में श्रीलाल
शुकल ने व्याकरण को ग्रन्थदारी की पीढ़ीया की बीमारी पर दर्शाया है। इस उपन्यास में
श्रीलाल शुकल ने व्याख्या की आवाज मुख्य पर
समझता है। उनके निर्देश न करते हैं, भौगोलिक कहीं व्याकरण नहीं दिखाई देता है बलि
व्यापक रूप सामाजिक व्यवस्था पर कहारी चोट व्यक्ति हुई है जिसमें ग्रन्थी भाषा की सोची
मात्र हुई है।

जीवनी और लोगी शास्त्रों पर जगदीशचन्द्र के शास्त्रों द्वारा व्याख्या कर हर एक
दृष्टिकोण के दृष्टियों पर तीव्रता बढ़ाने के लिए पर्यावरण है। इसलिए उपन्यासाकार ने भौगोलिक का
अधिकारिक व्याख्या कर पौधे व्याकरण द्वारा आत्म-पौषी ने घरों पूर्वांग बनाये है। लेखक की
बीमारी का विकास है, लेखक ने "भौगोलिक " और "काल घाम"। जीवन को कही व्याख्या
इतिहास, चतुर्वेदी कहते हैं, "उदय रेखा से हुआ का दिया नहीं जलता" ऐसे भौगोलिकों मे ग्रन्थी
"ग्रन्थियों के बिना भी जीवन आत्म-मज्जा लगता है।" [14] इस उपन्यास के एक-एक नाम भौगोलिक
और अभिव्यक्ति का उपन्यास करने हैं। उनका व्याख्या संरचना में इस तरह समाप्त हुआ है कि तब हुआ
उसी घरों की उपज लगता है। इस तरह जगदीशचन्द्र और श्रीलाल शुकल ने गाने के रंग को
अपनी दीनी कला से बुलंद कर अपनी अनुभवात: को समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

भूमि लोकी और अर्थव्यवस्था की समस्याएं पूर्ण सामान्य दृष्टि में तीन ने रखे गाने की है। लेखक
का यह "भारती" उपन्यास ठेठ मानकास पर आवरणी नहीं है बलि मानवता की स्थापना का ग्राम
नहीं है। बलि मानवता की स्थापना का ग्राम है। कभी न छोड़े खेत" और "भारती धारा न अपना"
कोई ग्रन्थी अर्थव्यवस्था के जीते-जागरे है। भौगोलिक पृथ्वी के "सम्पूर्ण भूमि" की संरचना के इसी
भूमि पर हुई है। "तोक-मंत्रकूमर" की जीवन घटकों को इसीने उपन्यास की तात में समाप्त
किया है। ऐसे नेताओं ने यथा जीवन घटकों के रूप में तोक-रासित को नई
संरचना के लिए सामान्याकारण पुरोहित कर गतिविधि है,
"मणिमुकुर" ने "सज़ोद मेमने" राजस्थान के रेखलाम के स्थित नेपिया में जाते और दराज में स्थित घोवारा गांव में आधारित किया है तो घड़ीधारीय महल ने अपनी "धरती" में फंजब की पार्श्व में स्थित घोवारा गांव में घमाड़ीयों और कौशलियों के स्थान से स्थानपत्य में दृष्टि दिखाई देने की कौशला की है। दोनों उप-पक्षकारों का संगठन मानद्वार सामान्यता में सामान्यता आता है। इस अवसर में "मणिमुकुर" की "सज़ोद मेमने" की "सुर्खा" और जगदीशवंद्र की "धरती" की जोन दोनों उपन-अपने स्तर पर छली गयी है।

स्वतंत्रता के बाद अन्य भी भारत का गांव सामाजिक-आर्थिक न्याय और मानवता के लिए तरस रहा है। स्वतंत्रता आन्दोलन सामाजिक सीमा और पुंजीजाड़ी विरोधी की ओर दूरस्थ-पत्ता करने से नीचे हो गया है। "नेपिया" गांव के ज्यो और "धरती" के अमार अभिवचन के दूरस्थता से पीर हरण हनुमा मणिमुकुर और जगदीशवंद्र के अंकित के साथ-साथ दोनों बदल उपलब्ध हैं। दोनों रचनाकर्ताओं ने यह दर्शाया है कि यहाँ "मेमने" की "सुर्खा", जबसे हो या "धरती" का लकी, जीतू लो। ये समानता यात्रा के राहीर है जो अधिक की दिगम्ब का लंबे करते हुए गंतव्य का निर्धारण करते हैं।

जगदीशवंद्र में डेलना अधिक, क्लक कम है जबकि मणिमुकुर में भी अधिक और डेलना कम। वाल्मूट इसके ले सामाजिक-आर्थिक आकृतियों की लिए झुके हुए है। दो त्योहार द्वारा मेमने का स्थान उपयोग नया पड़ा है कि "भारतीय समाज के दृष्टिकोण और आमेरिका की समानता का" दिखाई देने है। अन्तर्वता कपड़े दोनों के ही अंतरित या नीचे हैं। धर्माचार अन्तर्वता कपड़े में धर्मालय और गर्दन के दोनों (15) मणिमुकुर ने वे मेमने तहत उपयोग का अलग कलाम अंतरित ते आधारित बांधकाम प्रदर्शन किया है वही जगदीशवंद्र में अन्तर्वता कपड़े में धर्मालय का स्थान आता है। दूरस्थता कपड़े में स्वाति "संसार का हृदय" परिषद के दो मणिमुकुर में नाहर की प्रतिवेदन करने की निम्नगता है।

मणिमुकुर के साथ युक्त समस्ति में समाजों में उसे समाकृति उपन्यासकार है।
इन्हें अपना नहीं है। दोनों उपन्यासकारों ने, हरिकुमारों की इस पीढ़ी की पत्नी की जगीता पर अनुप्रयोग किया है। तत्त्व का यह कथन है: "तारी टहल उनके पराम्पर है, तारी जगीता रहा है, कोई वेतन, कोई धनी हाथ, इनका नहीं है, केवल रास्ते इनके हैं। .............. आजादी के बाद भी कोई जगीता इनके नहीं हो सकती।"[16] वहीं दूसरी तरह यथा बाली-उत्तर के इस कथन की जगीता पर कहता है: "इस तेरी मानकिता फिस्तन नहीं है। मैं नहीं है।"[17] दोनों की यह मैत्र्या कृति उपन्यास करने में सहायक है। रामदरबार बिश्व ने जगीता के माध्यम से और जगीता अपने-अपने के नाम के माध्यम से कृति के स्वर उद्घाटन किये हैं। दोनों के विद्वान अनुभव तर धरी के बाद भी अदृश्य निरंजन में दोनों एक दी दिशा की ओर उभर कर हों दिखाई देते हैं--जगीता अनुष्ठ- "कैसा का मालिक मज़दूर है।"[18] बाली-- "मैं किसी तरह के काम नहीं करता। मैं किसी के पास मात्र नहीं पड़ा हूँ जो बेहाल करे।"[19] अतः दोनों उपन्यासकारों- बाली की मूल वेंटला की कृति का स्वर दौड़कर बुद्धदेव की परम्परा में शामिल हो गये हैं: "कहीं-कहीं बुद्धदेवीय परम्परा का अभाव हो तो लगता है।"[20]

हिंदी में दशम वर्ष को लेकर कई उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों का निर्माण किया है। अन्य भारतीय भाषाओं जैसे गर्मी में दशम वर्ष के जीवन का उपन्यास विवाह के अंतर्गत पर्याप्त उत्तर गया है तथा वे उपन्यास फ़ूडवाअली व प्रागातिक का गये हैं। छेड़े- अभ्यारय का गर्मी उपन्यास "अनुष्ठ" इसी वर्ष की प्रतिनिधित्व करता है। इसी परम्परा में बुद्धदेव अनुष्ठ की "परती धन न अपना" एक प्रशंसक कृति है। इस उपन्यास में यह कथन है कि "पैद-दशम दौड़कर भी बुद्धदेव अनुष्ठ के इस उपन्यास में दशम वर्ष का जीवन मानिक व प्रागातिक विवरण प्रस्तुत हुआ है और जब तक दशम वर्ष का जीवन तुम्हें नहीं जाता तब उपन्यास हमें उनकी धर्म का ध्यान दिलाता रहेगा।"[21] जगीता अनुष्ठ और वर्मण बाली--

बुद्धदेव अनुष्ठ ने निम्नलिखित तरह पर अपने अनुभवों को साकार करने का प्रयास किया है। "बम्बी ने पड़े थे, वे" इसकी अनुभव जगत में निलाचलित एवं नम्बरदारों की जातीय संघर्ष सुरुवात है। इस आश्वास का कारण एक नारी- जगीता और है, जिसने अपने जीवन की व्यक्तित्व और दृष्टि के लिए नई संदर्भ प्रस्तुत किया है। फांडिचेर दौड़कर तम्बन जातों के ऊर्जा और समाजी समानार का बीच की व्यक्ति है। बुद्धदेव अनुष्ठ ने इन जातियों में निवासी मुद्दागोप और उन्हें दर्शाने वाले तथीय ज्ञान, गौर, राज्य, राष्ट्रीय भाषा के विषय पुलिस के रूप में परत-दर परत प्रकट करने का
प्रयाल किया है।

अध्यायपुर के अभाव में भी संबीद वातावरण का प्रभाव अध्ययन जातियों के लिए अत्यन्त सहायक है। क्योंकि: "पुलिस और अदालत की योजनाओं का इतना प्रभावित अध्ययन हिंदी के किसी अन्य उपन्यास में नहीं मिलेगा।"(22)

उपन्यासकार ने नारी को नवीनतारा के रूप में अवतरित किया है। अभिनवता को हरीती दी है। गांव की नारी सहरी नारी से कही भी कम नहीं है। यह हरी प्रेमचंद के "लेखासन" की तुलना की स्थिरी दिलाए। प्रेमचंद और जवादीशमन्द्र ने नारी जनता के प्रति समानार्थ वृद्धिकोण रखा है। इसी कारण है कि गांव की नारी भी विद्रोह कर रही है। उनके विवाहों में प्रगति की पदयात्रा करते। विवाह समस्ती का कथन कितना सटीक है कि "अभिनव तम भी तो आवश्यक है। तमारी भी तो जनवा है। धूसरों का राग-रंग, हंसी, गुलाल, खेड़-खेड़ अपने मन में भी भावना होती है। जब मृत्यु में और खा न मिले तो हार बर जोरी करनी पड़ती है।"(23) यह कथन जब विषय की धारा को ही अंकित नहीं करता अतिम तमन्त्र के उन विषय को भी भेदज्ञानी देता है कि यदि नैतिक मर्मताओं की रचना करनी हो विषयों को मानवीय अधिकार या तो होगा। जवादीशमन्द्र ने भी जलवायुक्ति के माध्यम से इसी विद्रोह की धारा को तमार तक समर्पित किया है:- "लेकि में ऐसा नहीं होने दूंगी। में उनके मुँह में दहलती हुई लहरी देना चाहती हूँ। उनके चरण खड़ी होना चाहती हूँ। जलवायु और न बढ़ता पूरे त्वर में बढ़ा।"(24)

कहना न होगा कि स्वायत्तता के बाद धूसरों की जाति से मुलात होने के बाद भी उनकी दृष्टि छोटी बाली संबंधित जाति के मन में दिखना लहरा से दिखाई देता है। ये दिखना लहरा है:- पुलिस, अदालत, अनेक, गुलाल, डर्टर। इनका आरंभ है- इन गुलामी जातियों जीवन पर। ये आरंभ मानवीय मूल्यव्यवस्था की धृती की तरह नष्ट करने के लिए गुलाम उठता है। जवादीशमन्द्र ने इस आरंभ को धोः संबंधित लेख में व्यक्त किया है।

नरेन्द्र कुंद्री ने 1972 के "आरंभ" उपन्यास में महानगरी आरंभ को विविधता किया है। वे आरंभ-पृथक, गुलाल, अवयवात्माओं का, समाज के दादारों का, धूसरों का। जवादीशमन्द्र ने उन बांटने को भारतीय समाज में जीवन आरंभ को प्रसूत किया है। नरेन्द्र कुंद्री महानगर
निम्नांशी है आः उन्होंने महानगरीय आलांक को रैखिक किया है तो उग्गीशचन्द्र ने ग्रामीण परियोजना में व्याप्त आलांक को उचित हुए प्रस्तुत किया है और दोनों उपन्यासकारों ने अनुभव किया है कि अलग-अलग और व्यक्तिगत लोग भारतीय आदर्श परम्परा को पता की ओर ने जा रहे हैं।

उग्गीशचन्द्र और वणपाल :—

विभाग के बाद कई गांव महानगर में विलीन हुए। नगर के विकास और वित्त पोषण तथा मुद्राविकास से गांव की अपनी जीवन को रैमेटिक करने की प्रक्रिया ने व्याप्त उत्तर दिया है। अपनी आदर्श और अवसर के लिए वे ग्रामीण अन्यथा अनुष्ठ- विनायक और रुप के संबंधों व्यावसाय करते हैं। जबल्पूर इनकी ग्राम जीवन अध्यादेश रोका बन कर रह गई। महानगर के बदले जिन्होंने इनकी जीवन ने विकास के रूप में निकल से देखा है जिसे "मुद्री तर बाँकर" और "वात-मोदाम" में उल्लास है।

इनके माध्यम से विभाग ने चार भारत में यहाँ को व्यवसायिक रूप देने में जीवन निवास की क्रममत्रेपित है। इन तंत्रज्ञातों के एक में उपन्यासकारणीय विवाह के निजी नियता वात-मोदाम को व्यावसाय करते हैं। "यथालय" क्षेत्र "सुशुष्क" (दो भाग) एक बरसित विस्तार है।

एक विवरण का विचार है कि "सुशुष्क हर बाँकर मोदाम" ने यह हां गांव बनाई दारागुहे है। दोनों उपन्यासकारों ने विभाग से उत्पन्न भारतीय और व्यक्तिगत पूर्वाधिकारियों के जीवन की यथार्थ को व्यवसायिक क्षेत्र में स्थान दिया है। "जो विभाग के बाद के भारतीय जन-जीवन की दर्शन भरी जीतल परिवर्तित का जीता-जाना फिद पाठकों के लाभ में प्रस्तुत करता है।"(25)

वणपाल ने यह पहचान निर्देश था कि धम के और राजनीति के कारण ही देखे के दो दृष्टि है। धार्मिक उल्लेख और समाजमी राजनीति समाज के लिए धार्मिक निहत हुई है। उपन्यास "सुशुष्क-शहर" का पुरुष बाण धर्म-मादद और राजनीतिक साँभीता के गठबंधन को लीक बनाने है तो द्वितीय बाण में फूली अवसर लें और समाजमी उल्लेख के धर्म विस्तार की जिम्मेदारी पहुँचते है। लेपर्नी बाण अनुभव की सयात में अपने समाज का चक्कर करना चाहता है। उसे अपने समाज के विवाह में विवाह है। रोक पाकिस्तान देश अपने विवाह का समाज में विवाह है - हम दूसरों की ताकी नहीं रोका, उन्हें लाये हैं क्योंकि उन्हें हिंदी माँ के ख्यात के अन्य हाथ नहीं पूछत। .........
लाठा टम तो कैम्य में भी नहीं रहे। मउदूरी की तिर पर सबसे का टोकरा उठाकर, गली-गली पूर्में। अब तालीकिल पर फरी लगा ला। .......... मेरा शुरुआत नहीं फिर सकता।" [27]

लेखक जहादीश्वरद्वंद्व ने अनुराग किया है कि इन गुम्मीयों को किसी राजनीतिक दल या देश से पूरी तरह से नाम नहीं ले सकते। रॉटी, कपड़े की समस्या से टकराय इनकी भूमिका और समस्याओं की ओर नहीं जाती है। व्यक्ति: इन्हें किसी स्थान या समस्या से भी कुछ विविधता से नाम नहीं ले सकता है। पर अपने अनुभव और अविलेख के कारण वे पूर्व राजनीति के द्वारा बढ़ी सत्ता से गुमराह कर दिए जाते हैं। ये तीनों-चारों गुरुपीय- सफ़ेदोख़ार राजनीतिकों की पारंपरिकता के ग्रास का जाते हैं। व्यावहार ने इसे "वृक्ष-नम" में व्यक्त किया है। भोजन मूल की गली का यूनान ऐसा ही उदाहरण है। उसकी निर्माण पर वह उसकी निरीक्षा और अभिव्यक्ति को ही प्रकट करेंगे। वह पाठक की मानवीय संदर्भों को पूरी तरह के सब भक्ति करती है। तृणमली और मुरलाल (मुर्दी भर करकर) अपनी अभीन बने कटारे तक भरी तथा अवश्यकता लोगों के कारण उसे केवल प्राप्त करता है। वे त्राज्वालिकारों ने इस उपन्यास में इक्बल से अदिक इस्लामियत के हत्या की प्रशंसा करना वाला है। उसकी लेखनांक ने यह अभिव्यक्ति किया है कि इस्लामियत की स्थापना में यहाँ लगा गया है और इसे उपाय फूसने में तीन भी समय नहीं लगता है। अतः इक्बल की प्रशंसकता का बना है। यही इस उपन्यासारों का कथा है। पाठक अध्ययोत इस प्रश्न का उल्लंघन की बोलते हैं। यह लेखकों का मत्त्याय है।

व्यावहार ने अपने उपन्यासों में इस वैज्ञानिक पुस्तक में अपेक्षाकृत दीवन वृहत्त का विशेष किया है। जो मनुष्य को मनुष्य से नामान उसे मूत्तम्पत्ति, सिख अतिरंजन में बांट देती है। जम्बुद्ध, शून्य, शिख-सुन्दी आदि वर्णों में दिव्यता करते हैं। व्यावहार ने वैज्ञानिक जीवन वृहत्त अपने की अभिव्यक्तियाँ बना दिया है। गजाधीश्वरद्वंद्व ने "मुर्दी भर करकर" में इसे इस प्रकार व्यक्त किया है। "टिन्दू, और सिख तो इस भी जाने जोदे मराने। इन्हा दे ते नज़- मौस दा रिशता ए"। [28]

व्यावहार का "दत्त" जगदीश्वरद्वंद्व के "मुर्दी भर करकर" और व्यावहार का "देव" जगदीश्वरद्वंद्व के "घास गोदाम" से लंकार है। समान भावनायोग में अपने-अपने शब्दों को व्यक्ति के लाभ प्रस्तुत कर दोनों ने व्यावहार को सुधीरण प्रदान की है।

"मीरा" अपने "दत्त" दंगल के परिचित परिवेश में यह आम रंगकाल: कभी न करती जो नीचे बैठ जाते हरण गई रहता है। शराबपीठी सिरिसरों और दिनदी तथा अनंत के
अपरिषित परिस्थित में तीता भैंसी आवरण और कार्यक्रम के लिए मजबूर अग्रितित नारियाँ हैं। लाइकिलों ने द्वारा-प्रियता, होटल लेकर धूम वालों, अँदरूनी कर दिया दिया दी दूर से तो कोई गणना नहीं है- "अकाल तार अपारित नहीं पढ़ी स याददार विथ विच इस कपड़े दी दुर से तारी ते मेला वड़ा भरा हैंड ली। उन्हा ते योक कपड़ा है, के पर मूल बेचना स् ल्यूरा कर दिया के भवान हे व नेताओं ने बताया।"[29] यथार्थ और जगदीशचन्द्र ने इन तरह व्याख्याता विषयसम्बन्धों के दर्शनक और अग्रितित दृष्टिकोण को देखा है। इन पूरे समस्याओं के पूरे में पढ़-समझकर पाठकों के चेतना विभाजन की पूर्वभूमि में अग्रितित व्यय ने खंडा का प्रतिसाद करने के लिए है। इन उपन्यासों ने यह समझा कि उस समय व्यक्ति और जीवन व्यक्ति को तपस्य कर देसा वाहिज़ जो मानवता का दिन-दहाड़े हारा कर रही है।

जगदीशचन्द्र और यथार्थ ने इन तरह गार्ना भी कही-कही, अलग विषयक देखा है। जगदीशचन्द्र ने अपने इन उप-नाटकों में - "मुदिती भर लोक" और "धात गोदाम" में कही भी महत्त्वपूर्ण हूड़कोण को धारण के प्रयास नहीं किया है। जहां तक "धरती धर न अपना" का प्रयास है- वह गृहीतों का आर्थिक संचाल कहते हैं- वहां वे मर्मत द्वारा द्वारा के विवाह के क्रियात्मक स्थ का लेखा है, जबकि यह विषयक उनके उपन्यास के आर्थिक उप-उपन्यास के आर्थिक बीता है। उनके विषयक और विस्मयवाद बहुत बाद में उपस्थित होते हैं। जबकि यथार्थ के "देशा" और "वतन" में मन्तव्यवाद के सैद्धांतिक विचार की दृष्टि भी छूँका होता है। आलोचकों ने इन विचारों दो-कहीं विचारों की कहानी भी कहा है।

उपन्यास तथ्यों के होते हुए भी दोनों उपन्यासकारों में परिस्थिति जन्म उन्मुख और अव्यवस्था के विलक्षण हुमान की दृष्टि सीमित नही है। उन्म्य के गुरु यही जिस तरह के होने वाले- वैकल्पिक उद्देश्य के अन्याय है, वास्तविक समय में गृहीतवाद या सामाजिक आदर्शों द्वारा किया जाने वाला गृहीता है अन्यवाद धार्मिक प्रवृत्त के प्रथम से सर्वाधिक प्रयास की बुनावट देने का हल या परम्परा या इकट्ठा सूक्ष्मता से संकुचित कोई तौर पर हो ये दोनों उपन्यासकार जनकर प्रयास करते हैं। इनमें किसी के दर्शन में नहीं है कि हमे दोनों हुमान विचारों के माध्यम में मूल्यवान हो जाये हैं। कोई दुःखा की ठोसता करता है तो कोई दुःखा की ठोसता के अलावा में मूल्यवान हो जाये हैं। दोनों दुःखों की ठोसता करते हैं वे समाजतीन हुमानवादों की चादर को छार-छार कर भीतर गलत रही
मानवता के सोंड़ी को दुःखिया के समक्ष रखने के प्रयास करते हैं। अंतः दोनों उप-प्राकारों के व्यवसाय की अंतरिक-संरचना के प्रमुख तरंग उनकी सही एवं धूमिक के परिस्थित में देखा जा सकता है।

पूर्वीयादी समयावधि और भाषा व्यवस्था के कितने हड़पकड़े और दुर्विष्ट संज्ञाहित होती है, किसी तरीके द्वारा व्यक्ति को भटकाव और प्रलोभनों के जन्म में समेटने के कितने नुक्सानियों के रूप में बदलने के लिए उठाकर किया जाता है—

इतिहास का दक्षिण रचनाकारों का भाषा ज्ञान का अनुभव है। अपनी मान्यता-मालों को सामाजिक तक इन्तेही सम्बन्धित किया है और इन्हें नए गांव, नये मार्गों, नये नृष्ण की स्थापना के लिए नये आयाम दिये हैं। इसलिए वे उप-प्रत्यक्ष संरचनाओं की सम्प्रभुत प्रक्रिया में सहभगी होते हैं। घटक और जनविश्वास-द्रुत में अपनी आन्दोलन क्षेत्रों में एक ही विचार में फूलिया किया गया है—

"आजजादी से जरीज़ को छिलुआ क्या?"[30]

जगदीश चन्द्र, अपनी आदर्शवादी उन्मुक्ति में प्रेमचंद की "रंगभूमि" से व्याख्यान निकट है। "रंगभूमि" का प्रतीत पान "सुरुवात" है। जब इतिहास के कार्यकारी ने अपनी तथा गांव की जमीनी को भागों के लिए अंतिम गाँव तक संस्थापना करता है, वह जमीन की सम्पत्ति है, जानवरों की वाराण है। उस जमीन को बुनाई कार्यकर्ताओं में बदला जा रहा है। प्रेमचंद के विचार सूर्यवाद के इस कथन में उपस्थित है: "सरकारियों द्वारा गांवों में कृषि का प्रलय सह गया है। यदि यह देगा यह रौनक बढ़ापेगा यहां सारी, गांव का परवरण बढ़ा जाएगा। जनजीवनी भी तो अकसरस जानेंगी, परंतु भरोसे हमारी भूमि-बूटियों को धूर्त, रक्षा का अधिकार में होगा।" इतिहास के कितने अन्य काम छोड़ मंगूँ के लालाख में ओरे, बुरी-बुरी बातें सीखने और अपने बुरे-बुरे अयोग्य गांवों में फूलेगी।[31]

सत्य का यही स्तर क्षण जगदीश-द्रुत के "घास-गौज़म" में अभिव्यक्त हुआ है। तात, सुखिया और प्रत्याद तैर आकृतित है। प्रत्याद के शासक के नये से उपन्यास का प्रारंभ होता है। और नयी आजादियाँ की तलाश में उसे उपरकार होती है। तात का पद्मारो के प्रति कथन उपयुक्त कथन की संस्थापना लिए हुए है— पहले सड़क पर आते जमीन किसी। इस सरकार के उपर की जमीन ने ली। लिये से सबने गेट पाकर लिये, रहत उतार लिये, बुरे ने बेच दिये, कुछ ने रख दिये। गाँव में हर दीवा का गहरा धुमाता है। पुराक्ष के समय से उपरकार गांव लाल हो हों किंतु में उसके साथ है।[32] इस तरह जगदीश-द्रुत और प्रेमचंद का ग्रामीण कल्याण में नई नीतिकीरण एवं मुंहोंनिवारण के प्रति संघर्ष करते हुए स्थापित है।
निकाय में उप-प्रमुख अजीज चन्द्र हिन्दी उपन्यासकारों प्रेमचन्द, अज्जाम, रामदास मिश्र, गणिमुकुर, नरेन्द्र कौली, यशपाल ते साम्य-वैपम्य रखते हुए प्रेमचन्द के अधिक निकट हैं। शक्तिशाली के पौराण उन्होंने यही प्रमाण ग्रहण किया था कि वे प्रेमचन्द के प्रमाण से मुक्त नहीं हो पाये हैं। चर्च नहीं की पुनर्नियोजन से भी बिल्कुल मुक्त है। तथ्य भाग मूल में अजीज प्रेमचन्द के सहयोगी दिखाई देते हैं।
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>लेखक के नाम</th>
<th>जित्रा</th>
<th>पृष्ठ संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>डॉ. नामदेव सिंह</td>
<td>आलोचना - ९१</td>
<td>73</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>डॉ. तरवण ठाकुर</td>
<td>अंबेडकर के उपन्यासों की शिल्प विधि</td>
<td>86</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>डॉ. इन्दुनाथ मदन</td>
<td>आज का हिन्दी उपन्यास</td>
<td>31</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>डॉ. केदारनाथ कृष्ण शर्मा</td>
<td>अंबेडकर साहित्य प्रयोग और मूल्यांकन</td>
<td>404</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>जगदीशचन्द्र</td>
<td>यादों के पटाख</td>
<td>139</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>डॉ. युभस्तन</td>
<td>अङ्कल</td>
<td>45</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>जगदीशचन्द्र</td>
<td>यादों के पटाख</td>
<td>70</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>डॉ. तरवण ठाकुर</td>
<td>अंबेडकर के उपन्यासों की शिल्प विधि</td>
<td>88</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>डॉ. सिस्टर क्लेंट मरी</td>
<td>हिन्दी स्वतंत्रताप्रदर्शन विज्ञानक गद्दी</td>
<td>83</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>डॉ. इन्दुनाथ मदन</td>
<td>समाजवादी हिन्दी साहित्य एक नई दृष्टि</td>
<td>106</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>डॉ. बदरी प्रताप</td>
<td>हिन्दी उपमान की प्रभुत्वता</td>
<td>21</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>डॉ. यामन ताल</td>
<td>प्रतिनिधि हिन्दी उपमान</td>
<td>114</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>डॉ. लीलाचंद्र शर्मा</td>
<td>प्रेमचंद के परम्पराके परवर्ती उपमानार्थक</td>
<td>128</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>डॉ. इन्दुनाथ मदन</td>
<td>अध्युपासिक और हिन्दी उपमान</td>
<td>108</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>डॉ. तरवण ठाकुर</td>
<td>अध्युपासिक उपमान</td>
<td>274</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>रामदास किशन</td>
<td>जल दूरकाल हुआ</td>
<td>168</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>कृष्णप्रसाद</td>
<td>धरती घान न उपना</td>
<td>72</td>
</tr>
<tr>
<td>पंक्ति</td>
<td>लेखक</td>
<td>शीर्षिका</td>
<td>पुस्तक संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>--------</td>
<td>----------</td>
<td>--------------</td>
</tr>
<tr>
<td>18</td>
<td>रामदर्श सिंह</td>
<td>जल दूर तथा हुआ</td>
<td>193</td>
</tr>
<tr>
<td>19</td>
<td>जगदीशचंद्र</td>
<td>वर्ती धन न अपना</td>
<td>184</td>
</tr>
<tr>
<td>20</td>
<td>डॉ० बंशोधर</td>
<td>हिंदी के अंग्रेजीक उपन्यास</td>
<td>212</td>
</tr>
<tr>
<td>21</td>
<td>डॉ० चमतकल गुप्ता</td>
<td>हिंदी के प्रतिलिपि उपन्यास</td>
<td>116</td>
</tr>
<tr>
<td>22</td>
<td>लौ डॉ० नाहर सिंह</td>
<td>आत्मकथा</td>
<td>76</td>
</tr>
<tr>
<td>23</td>
<td>प्रेमचंद्र</td>
<td>शैक्षिक</td>
<td>281</td>
</tr>
<tr>
<td>24</td>
<td>जगदीशचंद्र</td>
<td>कभी न लोइंग्रे खेत</td>
<td>208</td>
</tr>
<tr>
<td>25</td>
<td>डॉ० नरेंद्र जैन</td>
<td>अपूर्ण संकल्पक</td>
<td>70</td>
</tr>
<tr>
<td>26</td>
<td>डॉ० धनराज</td>
<td>हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास</td>
<td>182</td>
</tr>
<tr>
<td>27</td>
<td>जगदीशचंद्र</td>
<td>मूढ़ी भर कोकर</td>
<td>20</td>
</tr>
<tr>
<td>28</td>
<td>जगदीशचंद्र</td>
<td>मूढ़ी भर कोकर</td>
<td>37</td>
</tr>
<tr>
<td>29</td>
<td>भीष्म साहित्य</td>
<td>तालम</td>
<td>108</td>
</tr>
<tr>
<td>30</td>
<td>प्रेमचंद्र</td>
<td>रंगमृणि</td>
<td>88</td>
</tr>
<tr>
<td>31</td>
<td>जगदीशचंद्र</td>
<td>पात गोयम</td>
<td>47</td>
</tr>
</tbody>
</table>

==:0:==